RESEARCH FRONT

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341
Impact Factor – 1.115

हिंदी साहित्य में उपन्यासकार ममता कालिया का योगदान

प्रा.सौ.सविता शिवलिंग मेनकुदळे
असि.प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
छत्रपति शिवाजी कॉलेज, सातारा

प्रस्तावना

मनुष्य का जीवन अत्यधिक संघर्षों से भरा है। उसके जीवन का प्रत्येक पहलू विभिन्न प्रकार के संघर्ष और हार–जीत से टकराता रहता है। आज के मनुष्य की भाव–भावनाएँ, आशा–आकांक्षाएँ, सुख–दुःख की कल्पनाएँ आदि में बदलते जीवन के साथ तीव्रता से परिवर्तन हो रहा है। कोई भी साहित्यकार साहित्य की निर्मिती समाज में घटित होने वाली विभिन्न घटनाओं के आधार पर ही करता है। स्वतंत्रता के पश्चात के कालखंड में साहित्य में विशेष परिवर्तन नजर आता है। निबंध, नाटक, कहानी, उपन्यास, कविता आदि विभिन्न विधाओं के माध्यम से साहित्य समाज तक पहुँचता है। मनुष्य की भागदौड की जिंदगी का यथार्थ अंकन करने वाली विधा के रूप में उपन्यास विधा ही सार्थक सिद्ध होती है। उपन्यास समग्र जीवन को चित्रित करने वाली विधा है। जीवन को उसकी वास्तविकता के साथ अंकित करना उपन्यासकार का लक्ष्य होता है। आधुनिक युग की उपज के रूप में उपन्यास विधा ख्यातिप्राप्त है। हिन्दी उपन्यास लेखिकाओं ने उपन्यास साहित्य में सराहनीय, तथा मौलिक योगदान दिया है। इन महिला लेखिकाओं में कृष्णा सोबती, मृदला गर्ग, दीप्ति खंडेलवाल, ममता कालिया तथा अलका सरावगी आदि का नाम विशेष उल्लेखनीय है। इन महिला लेखिकाओं ने नारी की सामाजिक स्थिति, बदलती मानसिकता और समाज में हो रहे नारी के प्रति बदलाव के दृष्टिकोण को चित्रित किया है। आधुनिक युग में नारी केवल घर–गृहस्थी और बच्चों के लालन–पालन तक अपने आपको सीमित नहीं रखती। आज हर क्षेत्र में नारी अग्रेसर है। परम्परागत नीति नियमों को उसने तोडा है। महिला उपन्यास लेखिकाओं में युग की समस्त मान्यताओं को गहरी यथार्थ संवेदना देने की छटपटाहट स्पष्ट है।

साहित्य लेखन में नारी

जीवन और लेखन दोनों ही क्षेत्रों में नारी पुरुष का साथ देती आयी है। स्वातंत्र्योत्तर कालखंड में महिलाओं की स्थिति को देखते हुए भारत के साहित्यिक क्षितिज पर प्रथम बार गद्य के क्षेत्र में लेखिकाएँ अपनी पहचान बनाने लगी। समाज में प्रत्यक्ष रूप में विद्यमान युग की समस्त मान्यताओं को गहरी यथार्थ संवेदना देने की छटपटाहट उनके लेखन से स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। स्वतंत्रता के पश्चात नारी–शिक्षा का क्षेत्र विस्तृत हुआ और वह अपनी संघर्षपूर्ण स्थितियों से उभरकर जीवन निर्वाह हेतु घर से बाहर आकर अपने व्यक्तित्व को विकसित करने की कोशिश करने लगी इस संदर्भ में डॉ.छायादेवी घोरपडे लिखती है – '' ऐसा एक भी क्षेत्र नहीं है, जिसमें नारी का प्रवेश नहीं हुआ। आज नारी जीवन उस मोड पर आया है जहाँ कार्यप्रणालीगत भिन्नता मिटती चली। बौद्धिक क्षेत्र के साथ–साथ साहसिक क्षेत्र में भी वह पुरुष से होड करने लगी है। कुछ कार्यक्षेत्रों में तो वह पुरुष से बहुत आगे निकल चुकी है।''[1] नारी ने समाज की टूटी–फूटी मर्यादाओं, पुराने संस्कारों को बदलने के लिए अपनी आवाज मुखर करने की कोशिश की है। बदलते जीवन मूल्य, आने वाली नयी घटनाएँ, सामाजिक परिवेश आदि की वजह से महिला लेखिकाएँ लेखन क्षेत्र में अपनी पहचान बनाने लगी। इन महिला लेखिकाओं के द्वारा अधिक से अधिक उपन्यास लिखे गये हैं।

इन उपन्यास लेखिकाओं ने नारी जीवन के प्रत्येक पहलू को दुनिया के सामने लाया और केवल नारी–जीवन ही नहीं बल्कि नारी–जीवन को प्रभावित करने वाले क्षेत्र को अपनी लेखनी का विषय बनाया। इसी कारण उनके उपन्यासों में हर क्षेत्र के दर्शन होने लगे। समाज में आधुनिकता के नाम पर जो बुराइयाँ बढ रहीं है वह भी इन लेखिकाओं की दूर–दृष्टि से छूटी नहीं हैं। सामाजिक जीवन को देखा जाए तो टूटते हुए परिवार, बिखरते मानवी रिश्ते–नाते, विघटित हो रहे जीवन मूल्य, आत्मकेंद्री वृत्ति, बदलते सांस्कृतिक मूल्य आदि के संदर्भ में सोचनीय स्थिति नजर आती है। इन महिला लेखिकाओं ने अपने साहित्य के माध्यम से इन समस्याओं को उजागर करने का प्रयास किया है। नयी पीढी आधुनिकता बोध तथा पाश्चात्य

संस्कृति के अंधानुकरण से उच्छृंखल बनती नजर आ रही है। भारतीय समाज के रूढिग्रस्त सांस्कृतिक बन्धनों से, परंपराओं में जकडी हुई समाज व्यवस्था से ये नयी पीढी छुटकारा पाना चाहती है। इसमें नारी भी पीछे नहीं है। वह भी परंपरा से चली आ रही दासता से मुक्ति पाकर एक स्वतंत्र अस्तित्व की चाह रखती है। नारी के विभिन्न रूपों को शब्दबध्द कर उसके अंतर्मन की छटपटाहट को वाणी देने का काम महिला लेखिकाएँ कर रही है। उपन्यास के क्षेत्र में नयी विचारधाराएँ उत्पन्न हुई। नारी–जीवन का समग्र स्वरूप लेखन के माध्यम से प्रस्तुत किया जाने लगा। आधुनिक लेखिकाओं ने आज की नारी की सामाजिक स्थिति और मानसिकता को बडी गहराई से चित्रित किया है।

स्वातंत्र्योत्तर महिला लेखिकाओं में हिंदी में सोबती, मन्नू, भंडारी, उषा प्रियंवदा, मालती जोशी, शिवानी, शशिप्रभा शास्त्री, कांता भारती, मेहरुन्निसा परवेज, राजी सेठ, ममता कालिया, मृदुला गर्ग, अलका सरावगी, प्रभा खेतान आदि महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षरों के रूप में हमारे सम्मुख उपस्थित होती है।

ममता कालिया का उपन्यास साहित्य

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात उपन्यास विधा को समृद्ध बनाने में महिला कथाकारों का योगदान अत्यंत मौलिक तथा सराहनीय रहा है। हिंदी साहित्य के समकालीन महिला कथाकारों में ममता कालिया अपने व्यक्तित्व एवं प्रभावशाली रचनाओं के माध्यम से ख्यातिप्राप्त है। सन साठ के बाद हिंदी कथा साहित्य को जिन महिला लेखिकाओं ने समृद्ध किया है उनमें ममता जी का स्थान महत्त्वपूर्ण है। अपनी विशिष्ट लेखनशैली के कारण हिंदी की वर्तमान महिला लेखिकाओं में उन्होंने स्थान पा लिया है। हिंदी साहित्य को अधिकाधिक समृद्ध करने में अपनी वैविध्यपूर्ण रचनाओं द्वारा महत्त्वपूर्ण योगदान देने वाली ममता कालिया अपने कहानी एवं उपन्यासों के जरिए अधिक प्रसिद्ध हुई है। उनके कुछ उपन्यासों के सन्दर्भ में यहाँ विवेचन प्रस्तुत है।

बेघर – (सन 1971)

ममता कालिया का ‘बेघर’ उपन्यास उनके औपन्यासिक रचना क्षेत्र की पहली उपलब्धि है। स्त्री–पुरूष के शारीरिक सम्बन्ध को केन्द्र में रखकर लिखा गया यह उपन्यास आधुनिक समाज में पुरूष के दकियानूसी विचारों तथा सन्देही वृत्ति को दर्शाता है। समाज में स्थित झूठी मान्यताओं, रूढ धारणाओं पर ‘बेघर’ उपन्यास के माध्यम से प्रहार किया गया है। उपन्यास का नायक परमजीत परम्परागत सोच–समझ वाला, स्त्री के प्रति भोगवादी तथा सन्देही वृत्ति वाला है। तो उपन्यास की नायिका संजीवनी एक असफल प्रेमिका, कामकाजी नारी, पुरूषों की हवस की शिकार, शोषित नारी तथा स्पष्ट अभिव्यक्ति में असफल नारी है। ‘बेघर’ में इस संदर्भ में विवेचन है कि, ‘‘संजीवनी को अपने पर गुस्सा था बेहद, उस समय न बोल पाने का। क्यों वह गुनहगारों की तरह आँसू बहाने लगी, क्यों नहीं उसने परमजीत को झिंझोडकर कहा कि वह उसपर शक करने की हिम्मत कैसे कर सका।’’[2] परमजीत का संजीवनी को कुछ भी कहने का मौका न देते हुए रमा के साथ शादी करना, रमा की गैरसंवेदनशीलता, रूढिग्रस्तता, निरंतरता आदि से परमजीत का त्रस्त होना, बेचैन रहने वाले परमजीत की दिल का दौरा पडने से मृत्यु होना आदि बातें उपन्यास में चित्रित हैं। ‘बेघर’ उपन्यास समाज में स्थित रूढ धारणाओं, दकियानूसी विचारों, नारी जाति की अन्तहीन व्यथाओं, पुरूषों की भोगवादी वृत्ति, शिक्षित होकर भी परम्परागत सोच–समझ और अमानवीय व्यवहार की और संकेत करता है।

नरक दर नरक :– (सन–1975)

समाज में स्थित विभिन्न समस्याओं का अंकन करने वाले नरक दर नरक उपन्यास में प्रेमविवाह की समस्या, आर्थिक समस्या के साथ साथ सामाजिक समस्याओं का चित्रण मिलता है। कथा नायक जोगेन्दर साहनी उर्फ जगन चण्डीगढ के सामान्य मध्यवर्गीय परिवार में पला–बढा युवक एम.ए. अंग्रेजी की शिक्षा लेकर भी कई सालों तक बेरोजगार रहता है। फिर मुंबई के केडिया कॉलेज में प्रवक्ता के रूप में नौकरी पाकर छुट्टियों में ‘समर इन्स्टिट्यूट’ में काम करता है। वहाँ इस उपन्यास की नायिका उषा से उसका परिचय होता है। उषा बचपन से ही अध्ययन में रूचि रखने वाली, अध्ययनशील प्रतिभाशाली नारी है। उसके पिताजी की आकांक्षा यह थी कि वह पीएच.डी. करें विदेश जाये और प्रोफेसर बने। लेकिन उषा

और जगन के बीच प्यार का सिलसिला जारी रहता है। वे असंख्य सपनों का ढेर लेकर प्रेमविवाह में बँध जाते हैं पर समस्याओं का ढेर उसी अनुपात में उनके सामने उपस्थित होता है।

लेखिका ममता कालिया ने सामाजिक समस्याओं का बडा मार्मिक अंकन 'नरक दर नरक' उपन्यास में किया है। साथ ही नारी के अस्तित्त्व का चिंतन भी इसमें किया है। इस संदर्भ में डॉ. शाम सानप लिखते हैं, ''मानसिक झुंझलाहट के क्षणों में दाम्पत्य जीवन की अर्थवत्ता का चिन्तन करने वाली 'नरक दर नरक' की नायिका 'उषा' अपने अस्तित्त्व की रक्षा में निरन्तर सचेत रहती है।''[3] उषा इस विचार से परेशान है कि यह बात शादी के पहले उसकी समझ में कैसे नहीं आई। स्त्री के जीवन में रूढि और परंपरा से चली आ रही दासता इस उपन्यास में अंकित है। आर्थिक समस्या से घिरे हुए व्यक्ति का जीवन नरक बन जाता है।

प्रेम कहानी :– (सन – 1980)

इस उपन्यास में लेखिका ममता कालिया ने प्रेम के सफल और असफल दोनों रूपों को अभिव्यक्त करके प्रेमविवाह की समस्याओं का उजागर किया है। साथ ही सामाजिक तथा व्यावसायिक समस्याओं का उजागर किया है। इस उपन्यास में शिक्षा में अत्यधिक रूचि रखने वाली जया, यशस्विनी नामक सहेली, जया के माता–पिता, बी.एस. अस्पताल में हाऊस–सर्जन का काम करने वाला गिनेश, फरीदा का भाई मुहम्मद, दूर के रिश्ते की आंटी आदि के माध्यम से नारी की सुरक्षितता, विवाह के पश्चात का अकेलापन, जीवन की भागदौड में व्यस्तता, डाक्टरी पेशा की व्यावसायिक समस्या सफल असफल प्रेम भावनाओं का संघर्ष आदि का यथार्थ अंकन किया है। जया उच्च शिक्षा के लिए दिल्ली विश्वविद्यालय में जाती है तब वहाँ गिनेश से उसका परिचय होता है। जया उसके बारे में ही सोचती रहती है। तब यकायक एक दिन वह जया से शादी का प्रस्ताव रखता है। तब जया महसूस करती है – ''आश्चर्य असमंजस और अस्थिरता की भी कोई भाषा होती ही होगी। मैं निःशब्द थी, मेरा रोम–रोम सशब्द था।''[4] यहाँ प्रेम की उत्कटता का चित्रण मिलता है। यशा और जया दोनों के दुःख समान है। यशा कहती है, ''उनकी न पूछ! उनके दिमाग में न जाने कितने खाने बने हैं, हर समय भाग–दौड, हिसाब–किताब। जब तक एक भी खाने का हिसाब बकाया हो, मजाल है वह आदमी आराम कर ले। अनुबन्धों से फुरसत मिले तो सम्बन्धों पर ध्यान दें।''[5] इसप्रकार से ममता कालिया ने नारी पात्रों की सुख–दुःखात्मक अनुभूतियों का जिक्र किया है।

लडकियाँ – (सन–1887)

यह एक लघु उपन्यास है। इसमें लेखिका ममता कालिया ने समाज की ज्वलंत समस्याओं को उजागर करने की कोशिश की है। नायिका लल्ली और सहनायिका अफशाँ की जिंदगी की विवेचन करते हुए सामाजिक असुरक्षितता का चित्रण किया है। प्रेम और विवाह के प्रति तटस्थ रहने वाली लडकियाँ लल्ली और अफशाँ अविवाहित जीवन के विविध आयाम उपस्थित करती है। महानगरीय जीवन की त्रासदी में वे दोनों हमेशा अपने अस्तित्त्व की रक्षा के लिए सचेत रहती है। अफशाँ की यह राय है कि, ''कम से कम अपनी हिफाजत के लिए आपका कुछ करना चाहिए। मेरा मतलब है क्या आपको अकेले यहाँ रहते डर नहीं लगता? इतने अकेले घर में, इतने बडे शहर में कुछ भी हो सकता है।''[6] अफशाँ के मन में वर्तमान समाजव्यवस्था में अपनी सुरक्षा को लेकर सन्देह होता है। इस उपन्यास में नारी की सामाजिक स्वतंत्रता का वास्तविक स्वरूप उजागर हुआ है।

एक पत्नी के नोटस् :– (सन–1997)

यह उपन्यास पुरूष के अहं का वास्तविक प्रमाण है। प्रेम–विवाह की समस्या का अंकन उपन्यास में किया गया है। नारी सुशिक्षित होकर भी पति–अधीनस्त तथा प्रताडित है इस बात का यथार्थ इस उपन्यास में प्रस्तुत है। खुद मुक्त रहने की पुरूषी वृत्ति और अपनी सुशिक्षित पत्नी को शक की निगाह से देखने की वृत्ति का विवेचन लेखिका ममता कालिया ने किया है। संदीप जब कविता के सामने ही नीलिमा भार्गव को प्रभावित करने का प्रयास करता है तब कविता तनाव भरे अन्दाज में कहती है – ''पुरूष वैसे भी तुम्हें कम पसंद आते हैं। औरतों को प्रभावित करना ज्यादा आसान और फायदेमन्द होता है, खासकर तब जब अपनी पत्नी की कीमत पर प्रभाव डालना हो।''[7] ऐसे मनोरूग्ण पति की विभिन्न हरकतों से कविता

तंग आती है। संदीप के अहंकार द्वारा प्रताडित नारियों के जीवन यथार्थ को प्रस्तुत करना उपन्यास का मुख्य लक्ष्य है।

दौड – (सन – 2000)

यह उपन्यास इक्कीसवीं सदी के आर्थिक उदारीकरण और बाजारवाद के परिणाम स्वरूप आज की युवा पीढी की खोखली मानसिकता का यथार्थ चित्रण है। बाजारवाद, उपभोक्तावाद तथा आजीविका वाद रिश्तों पर गहरा असर करता है। आधुनिक जगत की भागदौड में युवा वर्ग अपनी मर्जी से जीना पसंद करता है। माता–पिता उन्हें पुराने खयालों के लगते हैं। कैरियर को महत्ता दी जाती है। 'दौड' उपन्यास में चित्रित पवन और स्टैला शादी के बाद हजारों मील दूर रहते हैं। फोन, इंटरनेट जैसे साधनों पर ही वार्तालाप से काम चलाया जाता है। बच्चों की इन्हें जल्दी नहीं है। मानवीयता, एक दूसरे प्रति आत्मीयता, इस बाजारवाद की दुनिया में कहीं खो गई है। 'दौड' उपन्यास में एक ऐसा प्रसंग वर्णित है कि, कालोनी में मि. सोनी की दिल का दौरा पडने से मृत्यु हो जाती है। उनका न्यूयार्कवासी बेटा सिद्धार्थ माँ को फोन पर ही सांत्वना देते हुए कहता है, ''किसी को बेटा बनाकर दाह–संस्कार करवाइए। मेरे लिए तेरह दिन रुकना मुश्किल होगा।''[8] पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव हमारे देश के युवा वर्ग पर दिखाई देता है। अमेरिका में किसी की मृत्यु हो जाने पर लाश मुर्दाघर में रख देते हैं और छुट्टी मिलने पर अंतिम संस्कार कर देते हैं। बाजारवाद में पीसते जा रहे भारतीय समाज के प्रति चिंता जताते हुए 'दौड' उपन्यास के बारे में समीक्षक कृष्णमोहन लिखते हैं – ''बीसवीं सदी के अंत में भारतीय समाज के सबसे गहरे सांस्कृतिक संकट का आख्यान है 'दौड'।''[9] 'दौड' उपन्यास में लेखिका ममता कालिया मानवता के आधुनिक एवं नए–नए खतरों को रेखांकित करती है।

निष्कर्ष

हिंदी कथा–साहित्य को समृद्ध करने में योगदान देने वाली महिला रचनाकार ममता कालिया की रचना धर्मिता सराहनीय है। उन्होंने अपने उपन्यासों के जरिए समाज में स्थित दकियानूसी विचारों, रूढिग्रस्तता, नारी शोषण, पुरूषों की भोगवादी वृत्ति, पुरूषी अहं से निर्माण होने वाली समस्याएँ, प्रेमविवाह से उत्पन्न समस्याएँ, नारी की अन्तहीन व्यथाएँ, सामाजिक असुरक्षितता, महानगरीय जीवन की त्रासदी, आर्थिक उदारीकरण और बाजारवाद से उत्पन्न समस्याएँ, खोती जा रही मानवीयता आदि जैसी विभिन्न समस्याओं का अंकन किया है। ममता कालिया ने अपने विभिन्न उपन्यासों के माध्यम से समाज में स्थित संकट और आने वाले खतरों की ओर ही एकप्रकार से संकेत किया है। वे बीसवी सदी के छठे दशक से आज तक हिंदी साहित्य को अनमोल कृतियाँ प्रदान करती रहीं। वर्तमान जीवन की सूक्ष्मतिसूक्ष्म जटिलताओं की अभिव्यक्ति इनकी कथा–कृतियों में मिलती है। गहरे सामाजिक यथार्थ का प्रस्तुतिकरण उनकी कृतियों के मूल में दिखाई देता है। नारी के संवेदनशील अनुभवों और यथार्थ अनुभूतियों का सूक्ष्मतिसूक्ष्म अंकन इनके साहित्य के रूप में प्रस्तुत है। लेखिका ममता कालिया के उपन्यासों में गहरी सामाजिक चेतना पनपती है। ममता कालिया जैसी महिला रचनाकारों का योगदान हिंदी साहित्य की एक अमूल्य निधि है।

संदर्भ सूची

1. डॉ. छायादेवी घोरपडे – साठोत्तरी हिंदी उपन्यासों में परिवर्तित नारी जीवन मूल्य – पृ. 21, विद्या प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण–2008
2. ममता कालिया–बेघर – पृ. 100, साक्षरा प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण – 2002
3. डॉ. शाम सानप–ममता कालिया के कथा साहित्य में नारी चेतना–पृ. 222, विकास प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण – 2010
4. ममता कालिया –तीन लघु उपन्यास–पृ.138, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण – 2007.
5. वहीं –पृ. 183
6. वहीं –पृ. 99
7. ममता कलिया –एक पत्नी के नोटस्–पृ. 18, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण – 1997
8. ममता कालिया –दौड – पृ. 81, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, आवृत्ति संस्करण – 2010
9. वहीं – पृ. 7